International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

कम्पयूटर की भाषा के लिए संस्कृत भाषा के मुद्दे

डॉ रेनू श्रीवास्तव emailtorenu@gmail.com
डॉ कुंजन आचार्य , सहायक आचार्य, पत्रकारिता विभाग, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

acharyakunj@gmail.com

सारांश

संस्कृत केवल एक भाषा मात्र नहीं है। यह सभी भाषाओं की जननी है। संस्कृत भाषा भारत की आत्मा होने के साथ–साथ हमारे ज्ञान को बढ़ाती है, ये मेधा की मुखरता है। संस्कृत भाषा हमारे अतीत और वर्तमान के बीच एक सेतु का कार्य करती है। इसीलिये इस भाषा को सबसे पुरानी उल्लेखित भाषा कहा जाता हैं। हिन्दू धर्म के लगभग सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही लिखे गये है। आज भी अधिकतर यज्ञ और पूजा में मत्रों का उच्चारण संस्कृत भाषा में ही किया जाता है। संस्कृत भाषा में स्वरों और व्यंजनों की संख्या प्र्याप्त होने के कारण कम्प्यूटर में ध्वनि आधारित उपयोगों के लिए भी संस्कृत सर्वश्रेष्ठ भाषा मानी गयी है। वैसे भी संस्कृत को जिस देवनागरी लिपि में लिखा जाता है, वो संसार की सबसे अधिक वैज्ञानिक एवं पूर्ण लिपि मानी जाती हैं । संस्कृत के सर्वोत्तम शब्द विन्यास युक्ति के कारण कम्प्यूटर स्तर पर नासा व अन्य वैज्ञानिक व भाषाविद संस्थाओं ने भी इस भाषा को वैज्ञानिक भाषा मानते हुये इसका अध्ययन कराया है जो कि भविष्य में कम्प्यूटर भाषा के स्तर पर एक नयी क्रान्ति को जन्म देगी और आने वाला समय संस्कृत भाषा का होगा।

संस्कृत भाषा–

संस्कृत भाषा भारतीय उपमहाद्वीप की एक शास्त्रीय एवं प्राचीन भाषा है। संस्कृत भाषा को देववाणी अथवा सुरभारती भी कहा जाता है। आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत को ही माना है। हिन्दुओं के लगभग सभी धर्म ग्रन्थ संस्कृत में ही लिखे गये हैं। यहाँ तक की आज भी हिन्दु धर्म के अधिकतर यज्ञ और पूजा के मन्त्रों का उच्चारण संस्कृत में ही किया जाता है। संस्कृत भाषा के लिये कहा जाता है कि ये केवल एक भाषा मात्र ही नहीं है, बल्कि ये भारत की आत्मा है, क्योंकि संस्कृत एक ऐसी भाषा है, जिसकी खोज की गयी है, रचना नहीं। संस्कृत भाषा भारत की प्राचीन भाषा होने के कारण ये अतीत और वर्तमान के बीच एक सेतु है। संस्कृत भाषा को जानने वाले इसे भारत की ज्ञान परम्परा का वाहक मानते है। संस्कृत ऐसी भाषा है जिसमें ध्वनि और आकृति का सम्बन्ध मिलता है। जब कोई खास ध्वनि किसी खास आकृति के साथ जुड़ती है, तो वो ही ध्वनि उस आकृति का नाम बनती है। इसमें विज्ञान और प्रौद्यगिकी, चिकित्सा विज्ञान, कृषि, अर्थशास्त्र आदि सम्मिलित है। संस्कृत अतीत एवं वर्तमान में समन्वयक स्थापित

करने के साथ– साथ प्राचीन साहित्य की ज्ञान सम्पदा को भी संजोये हुए है। फिर भी संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान कोष को खोजने की कोशिश किसी ने भी आज तक नहीं की है और ना ही इसे आज तक प्रयोग में लाया गया है। भले ही हमारे धर्म ग्न्थ और मन्त्रों की भाषा संस्कृत है, पर ये भी उतना ही सच है कि फिर भी संस्कृत को हमारी बोलचाल, सवांद की भाषा नहीं बनाया गया है। संस्कृत भाषा में सात विभक्तियां हैं जो कि शायद ही अन्य किसी भाषा में होगी। इन विभक्तियों के कारण किसी वाक्य का पूरा भाव सही–सही ग्रहण किया जा सकता है। जबकि अन्य भाषाओं में हिन्दी की बात करें तो हिन्दी की विभक्ति "से" का प्रयोग कई रूपों में किया जाता है। उसी तरह से अग्रेंजी में भी "TO" का प्रयोग अलग–अलग कई रूपों में होता है। जबकि संस्कृत भाषा में सबके लिए अलग–अलग विभक्तियां है– कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अनादान, संबंध, अधिकरण, सम्बोधन इसी कारण से संस्कृत में अर्थ ग्रहण में किसी भी प्रकार का भ्रम नहीं होता है। यहां तक कि संस्कृत भाषा में अगर किसी वाक्य में शब्दों का क्रम बदल भी जाये तब भी उसका अर्थ नहीं बदलता है जबकि अन्य भाषाओं में अगर ऐसा होता है, तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। संस्कृत भाषा शब्दों की सबसे धनी भाषा है, इसमें हर शब्द के अनेक पर्यायवाची शब्द है, जैसे– पानी के 70 और हाथी के 100। हर भाषा में समय के साथ– साथ बदलाव आया है। लेकिन संस्कृत ही एक मात्र ऐसी भाषा है जिसमें कोई परिवर्तन नहीं आया है। ये भाषा अपने जन्म के समय जैसी थी, वैसी ही आज भी हैं संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यन्त ही परिमार्जित और वैज्ञानिक है। संस्कृत भाषा में किसी भी अन्य भाषा की अपेक्षा ज्यादा शब्द है। इस भाषा के शब्दकोष मे 102 अरब 78 लाख शब्द हैं, जो कि किसी भी अन्य भाषा से ज्यादा है। संस्कृत भाषा अपने विशाल साहित्य, विभिन्न प्रयासों एवं नवीन शब्दों के निर्माण की क्षमता आदि के द्वारा अमर है।

कम्प्यूटर–

आज का युग प्रौदयोगिकी का युग है। पिछले कुछ दशकों में विज्ञान ने काफी तरक्की की है। जिससे हमारे जीवन के हर क्षेत्र में मौलिक परिवर्तन हुए है। प्रौदयोगिकी के युग में आयी क्रान्ति ने ही कम्प्यूटर को जन्म दिया, जिसने पूरे विश्व में भारी परिवर्तन ला दिया।वर्तमान समय कम्प्यूटर का है। हम सभी किसी ना किसी स्प में कम्प्यूटर से प्रभावित है। कम्प्यूटर ने भी जितनी तीव्र गति से प्रगति की है, उतनी शायद ही किसी क्षेत्र में हुई है। अब कम्प्यूटर सिर्फ सूचनाओं का संग्रहण करने का, कार्यों को शीघ्र पूरा करने का माध्यम ही नहीं रहा वरन् कम्प्यूटर हमें हर क्षेत्र में एक नयी दिशा प्रदान कर रहा है। कम्प्यूटर का जन्म लगभग पांच दशक पहले हुआ था। सन् 1946 में संसार का सर्वप्रथम डिजीटल यानि कि सांख्यकी कम्प्यूटर जिसे अमेरिका की पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय ने बनाया था। तब से अब तक कम्प्यूटर के आकार–प्रकार उसकी कार्य करने की क्षमता में काफी परिवर्तन आया है। आज कम्प्यूटर हमारे जीवन के हर पहलू में प्रवेश कर चुका है।

कम्प्यूटर और संस्कृत भाषा–

गति से ध्वनि प्रकट होती है, ध्वनि से शब्द परिलक्षित होते है और शब्दों से ही भाषा का निर्माण होता है। ध्वनि के साथ एक आकृति जुड़ी और आकृति के साथ ध्वनि। इस अस्तित्व में हर ध्वनि किसी खास तरीके से कंपन करती है और एक खास आकृति का निर्माण करती है। संस्कृत भाषा में आकृति और

ध्वनि में आपस में संबंध है। अमेरिका की नासा संस्था जब अंतरिक्ष यात्रियों को संकेत भेजती थी तो वो अंतरिक्ष में जाकर उलट जाते थे। नासा ने हर भाषा में संकेत भेज कर देखा, परन्तु सभी भाषा के साथ ऐसा ही हुआ। जब नासा द्वारा संस्कृत भाषा में संकेत भेजे गये तो पाया कि उनका अर्थ अतंरिक्ष में जाकर नहीं बदल रहा है, क्योंकि संस्कृत भाषा में ध्वनि और आकृति के आपस के सम्बन्ध से शब्द बनता है।

वैसे भी संस्कृत भाषा का व्याकरण अन्य भाषा के व्याकरण की तुलना में भिन्न है। संस्कृत भाषा के व्याकरण के जनक पाणिनी एक गणितज्ञ थे। उन्होंने सबसे पहले इस बात को समझा कि भाषा का एल्जेब्रिक स्वरूप भी हो सकता है। इसलिए पाणिनी ने संस्कृत के व्याकरण को एल्जेब्रिक गणितीय भाषा का रूप दिया है। संस्कृत भाषा का व्याकरण स्पष्ट सुनिर्देशित सिद्वान्त से कार्य करता है। पाणिनी के व्याकरण में किसी भी तरह से अन्य भाषओं के व्याकरण की तरह छूट को कोई भी स्थान नहीं है यानि कि संस्कृत एक मानक भाषा है, जिसे हम बड़ी ही आसानी से आधुनिक कम्प्यूटर की भाषा से तादात्म्य कर सकते है। कम्प्यूटर की भाषा मशीनी होने के कारण भाषा के इस स्वरूप को आसानी से ग्रहण कर सकती है। कम्प्यूटर स्वंय किसी भाषा की रचना नहीं करता है, बल्कि व्याख्यायित भाषा के माध्यम से काम करता है। इसलिए कम्प्यूटर के बड़े विद्वान इस बात को मानते है कि पाणिनी का संस्कृत का व्याकरण कम्प्यूटर की भाषा के लिए एक आदर्श है। संस्कृत को कम्प्यूटर की भाषा माने जाने के कई कारण है, जैसे–

- संस्कृत में विभक्तियों के लिए अलग से शब्द का प्रयोग ना करके बल्कि शब्द में ही अतिरिक्त मात्रा अथवा अक्षर को जोड़कर उस विभक्ति का प्रभाव उत्पन्न किया जाता है।
- संस्कृत भाषा में किसी भी वाक्य का पूरा भाव सही–सही ग्रहण किया जा सकता है, क्योंकि संस्कृत भाषा में सात विभक्तियां है, जो कि किसी अन्य भाषा में नहीं है।
- अन्य भाषाओ में शब्दों का क्रम बदलते ही उसका अर्थ बदल जाता है, जबकि संस्कृत में किसी वाक्य में शब्दों का क्रम बदल भी जाए, तब भी उसका अर्थ वो ही रहता है।
- सबसे खास बात संस्कृत भाषा को जिस देवनागरी लिपि में लिखा जाता है, वो सबसे अधिक वैज्ञानिक एवं पूर्ण लिपि है। इसमें उच्चारण करने और लिखने में किसी भी प्रकार का भ्रम नहीं होता है। स्वरों और व्यंजनों की संख्या भी पर्याप्त होने के कारण कम्प्यूटर में ध्वनि आधारित उपयोग के लिए भी संस्कृत भाषा श्रेष्ठ मानी गयी है।
- संस्कृत के सर्वोत्तम शब्द विन्यास युक्ति के गणितीय भाषा होने के कारण कम्प्यूटर के स्तर पर नासा व अन्य वैज्ञानिकों ने भी इस भाषा को एकमात्र वैज्ञानिक भाषा मानते हुए इसका अध्ययन आरम्भ करके भविष्य में भाषा–क्रान्ति के माध्यम से आने वाला समय संस्कृत का बताया है।

निष्कर्ष–

कम्प्यूटर वैज्ञानिकों का मानना है कि वर्तमान समय में संस्कृत व्याकरण सभी कम्प्यूटर की समस्याओं को हल करने में सक्षम है। नासा के एक वैज्ञानिक रिक ब्रिग्ज का एक लेख "ए आई" पत्रिका में सन् 1985 में प्रकाशित हुआ, उसमें उन्होंने माना है कि "कम्प्यूटर के लिए सर्वोत्तम भाषा संस्कृत है।" वहीं The M C B D News Letter in April 1993 में महर्षि पाणिनी को First Softwear Man without hardwear द्योषित किया है। जिसका मुख्य शीषर्क था "Sanskrit Software for future Hardware".

कम्प्यूटर के काम करने के लिए कम्प्यूटर के अन्दर एक भाषा की आवश्यकता होती है, जो कि गणितीय होती है। संस्कृत भाषा का व्याकरण गणितीय सिद्वांत पर आधारित है। नासा द्वारा संस्कृत को कम्प्यूटर की भाषा बनाने के लिए शोध किया जा रहा है, क्योंकि संस्कृत का वाक्य विन्यास उत्तम है और त्रुटि की जरा भी सम्भवना नहीं है। नासा विज्ञानिकों की एक रिर्पोट है कि 6 एवं 7 वीं पीढ़ी के सुपर कम्प्यूटर पूर्णतया संस्कृत भाषा पर आधारित होगें। जो कि वर्ष 2034 तक बनकर तैयार हो जायेंगे।

संस्कृत के संक्षेपता के गुण के कारण ही इस भाषा को कम्प्यूटर प्रोग्राम लिखने के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा माना गया है, हालांकि अभी तक इसका प्रयोग इस कार्य में नहीं किया गया है। परन्तु हम जानते है कि जिस समय कम्प्यूटर का आविष्कार किया गया था, उस समय कम्प्यूटर के प्रयोग की भाषा अग्रेंजी थी, उस समय किसी ने नहीं सोचा था कि भविष्य में कम्प्यूटर के प्रयोग की भाषा हिन्दी भी हो सकती है। उसी तरह से आाने वाले समय में कम्प्यूटर की भाषा गणितीय व्याकरण पर आधारित संस्कृत भाषा होगी।

सन्दर्भः—

readerblogs.navbharattimes.indiatimes.com/?p=8577 4.9.17 12.05PM

https://hi.wikipedia.org/wiki/संस्कृत_भाषा 4.9.17 12.00PM

www.acharysiyaramdas.com/संस्कृत-भाषा-की-सर्वश्रेष/ 4.9.17 12.10PM

aryamantavya.in/संस्कृत-एकमात्र-वैज्ञानि/ 4.9.17 12.15PM

ancientindiajourney.blogspot.com/.../computer-programming-by-.. 4.5.17. 12.20PM

aajtak.intoday.in › जनरल नॉलेज › नागरिक शास्त्र 4.9.17

www.speakingtree.in/blog/sanskrit-and-computer 4.9.17